उत्तर:
यीशु ने पवित्र आत्मा की निन्दा के पाप को मत्ती 12:25–32 में बहुत स्पष्ट रूप से समझाया है।
जब फ़रीसियों ने यीशु पर यह आरोप लगाया कि वह दुष्टात्माओं को बेलज़ेबूल (दुष्टात्माओं के सरदार) की शक्ति से निकालते हैं, तब यीशु ने उनसे कहा:

“उस राज्य का विनाश हो जायेगा, जिसमें आपसी फूट हो… यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकालता
हूँ तो यह जान लो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ गया
है… हर प्रकार के पाप और निन्दा लोगों को क्षमा किये जा
सकते हैं, परन्तु पवित्र आत्मा की निन्दा क्षमा नहीं की जायेगी।”
(मत्ती 12:25, 28, 31 — ERV-HI)

व्याख्या:

1. पवित्र आत्मा की निन्दा—परमेश्वर के कार्य को जानबूझकर अस्वीकार करना है

फ़रीसियों ने अपनी आँखों से देखा था कि यीशु पवित्र आत्मा की शक्ति से चमत्कार और दुष्टात्माओं को बाहर निकाल रहे थे।

फिर भी उन्होंने जान-बूझकर इस दैवी कार्य को शैतान की शक्ति कहा।

यह केवल अज्ञान नहीं था—यह सच जानकर भी उसे दुष्ट कहना था (तुलना करें इब्रानियों 10:26–29)।
ऐसी मन की कठोरता व्यक्ति को परमेश्वर के सत्य से पूरी तरह दूर कर देती है।

2. पवित्र आत्मा सत्य प्रकट करता है—उसे अस्वीकार करना उद्धार का इनकार है

पवित्र आत्मा पाप के बारे में मनुष्य को सचेत करता है और यीशु को प्रभु के रूप में प्रकट करता है (यूहन्ना 16:8–11)।

जब कोई व्यक्ति पवित्र आत्मा की गवाही को जिद्दी रूप से अस्वीकार करता है,
तो वह उद्धार पाने का एकमात्र मार्ग ही ठुकरा देता है (तुलना करें प्रेरितों 2:38)।
इसी कारण यह पाप अक्षम्य कहा गया है—क्योंकि व्यक्ति स्वयं ही ईश्वर की क्षमा से मुँह मोड़ लेता है।

3. यह एक क्षणिक संदेह नहीं—यह लगातार हठ और हृदय की कठोरता है

यह पाप कोई अचानक किया गया छोटा सा संदेह या गलती नहीं है।

जो कोई अपने पापों को मान लेता है, परमेश्वर उसे क्षमा करता है (1 यूहन्ना 1:9)।
पवित्र आत्मा की निन्दा वह होती है जब कोई मनुष्य लगातार और जानबूझकर परमेश्वर के सत्य को अस्वीकार करता रहता है।

4. निकुदेमुस का उदाहरण दिखाता है कि फ़रीसी सच्चाई जानते थे

निकुदेमुस—जो एक फ़रीसी ही था—ने यीशु से कहा:

“गुरु, हम जानते हैं कि तुम परमेश्वर की ओर से आए एक शिक्षक हो। कोई भी वे अद्भुत काम नहीं कर सकता जो तुम करते हो, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो।”
(यूहन्ना 3:2 — ERV-HI)

इससे स्पष्ट है कि फ़रीसी अज्ञानता के कारण नहीं, बल्कि जानबूझकर सत्य का विरोध कर रहे थे।

5. विश्वासियों के लिए एक व्यावहारिक चेतावनी

जब हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा किसी व्यक्ति के जीवन में कार्य कर रहा है,
तो हमें जल्दबाज़ी में उसे बुरा, धोखेबाज़ या गलत समझने से बचना

चाहिए (याकूब 3:9–10)।
ऐसी गलत बातें परमेश्वर के कार्य को नुकसान पहुँचाती हैं और लोगों को ठेस पहुँचाती हैं।

6. उन लोगों के लिए प्रोत्साहन जो डरते हैं कि उन्होंने यह पाप कर दिया है

बहुत से लोग अपने पिछले पापों के कारण डरते हैं कि शायद उन्होंने यह अक्षम्य पाप कर दिया हो।
परंतु यदि आपके हृदय में पछतावा, संवेदना, और परमेश्वर के पास लौटने की इच्छा है,
तो यह स्पष्ट प्रमाण है कि पवित्र आत्मा अभी भी आपके भीतर कार्य कर रहा है (रोमियों 8:16)।

पवित्र आत्मा की निन्दा वह पाप है जिसमें मनुष्य पूरी तरह कठोर हो जाता है और पश्चाताप से इंकार कर देता है,
न कि वह व्यक्ति जो ईमानदारी से क्षमा चाहता है।

सारांश:

पवित्र आत्मा की निन्दा वह पाप है जिसमें कोई व्यक्ति सच जानते हुए भी
पवित्र आत्मा के कार्य और यीशु मसीह के सत्य को लगातार

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

अस्वीकार करता है।
यह अक्षम्य इसलिए है क्योंकि यह मनुष्य को उसी मार्ग से दूर ले जाता है जो उसे उद्धार तक पहुँचाता है।

लेकिन जो कोई ईमानदारी से पश्चाताप करता है और यीशु पर भरोसा करता है—
उसके लिए क्षमा और उद्धार निश्चित है।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp